# *Sociology Hons.*

# *B. A. Part - 2*

# *Paper - 3rd*

## Q. What is Socialization?

हमलोग जानते हैं कि मनुष्य जब जन्म लेता है तो उस समय बालक न समाजिक होता है और न असमाजिक बालक एक जीवित मनुष्य का एक पुतला होता है जो अपनी आवश्यकता को पुरा नहीं कर सकता वह पुरी तरह से दूसरे पर निर्भर करता यानी अपनी मात पिता और परिवार पर निर्भर करता है। अपनी आवश्यकताओं को दूसरे को समझाने में भी कठिनाई होती है। माता व पिता को समाज के अनुकुल बनाने के योग्य कर अधिक परिश्रम करनी पड़ती है बड़ा होकर समाज की सेवा कर सके! इसी प्रकार से पूरे संसार में अपनी सभ्यता के अनुकूल बनाने के लिये परिश्रम माता पिता और समाज को करनी पड़ती है।

Socialization एक प्रकार का समाजिक जीवन के ढंग को सीखने-सिखाने की एक प्रक्रिया है। समाजीकरण के द्वारा बच्चा रहन सहन, आदतें विश्वास, समाज के नियम, मुल्य, मानक, अभिवृतियां और रीति-रिवाज आदी सीखता है! दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि बालक के आयु बढ़ने के साथ साथ समाज के अन्य दूसरे व्यक्ति के भांति समाजिक व्यवहार सीखता है। बहुत से समाजशास्त्री ने इसकी परिभाषा इस प्रकार से दिया है।

(1) किम्बल यंग के अनुसार "समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति समाजिक और संस्कृतिक संसार संसार से परिचय प्राप्त करता है।"

इसका यह अर्थ होता है कि मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज की संस्कृति और

जीवन व्यतीत करने का method समाज में रहकर सीखता है।
इसी प्रकार दूसरे समाजशास्त्रों ने इन शब्दों में परिभाषित किया है
Secord and Backman, "Socialization is an international Process where by a person's behaviour is modified to confirm to expectation held by members of the group to which he belongs"
K. Young के अनुसार "Socialization means the process of including the individual into the social and cultural world"
उपर्युक्त विचारों यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य समाज में जन्म लेने के बाद अपने माता पिता और सामाजिक वातावरण में रहकर अपना जीवन व्यतीत करने उस समाज की सभ्यता, कानून और रीती रिवाज को सीखता है और उसी के अनुकूल जीवन व्यतीत करता है। समाजीकरण प्रक्रिया के अंतरगत अनेक सामाजिक मूल्यों और मानको का अधिगम करना पड़ता है संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आयु बढ़ने के साथ साथ व्यक्ति को समय समय पर आवश्यकता अनुसार सामाजिक मूल्यों, मानको और अभिवृतियों का अधिगम करना पड़ता है। इस से यह भी स्पष्ट होता है कि परिवार के साथ साथ समाज का बहुत बड़ा Role होता है। जो मनुष्य को जन्म से लेकर हर बढ़ते आयु में समाजिक रीति रिवाज के अनुसार रहना पड़ता है।